

डॉ. अगस्त कोकेल, इतिहास, सत्र 18, ईश्वर हमारे लिए लड़ता है, पवित्र युद्ध

© 2024 गस कोकेल और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. ऑगस्ट कोकेल द्वारा इतिहास की पुस्तकों पर दिए गए उनके उपदेश हैं। यह सत्र 18 है, ईश्वर हमारे लिए लड़ता है, पवित्र युद्ध।

अब हम उन अधिक उल्लेखनीय राजाओं में से एक के बारे में बात करते हैं जिनके बारे में हम शास्त्रों में सुनते हैं।

यह राजा यहोशापात है। राजा यहोशापात को इतिहास में बहुत सकारात्मक रूप से प्रस्तुत किया गया है, क्योंकि वह एक ऐसे राजा थे, जिन्होंने एक अनोखे तरीके से यह प्रदर्शित किया कि युद्ध में ईश्वर ही विजेता है और युद्ध आपकी अपनी सेनाओं की शक्ति से नहीं जीता जाता। अब, जैसा कि हम राजाओं की पुस्तक में जानते हैं, यहोशापात की कहानी अहाब के साथ उसके रिश्ते से बहुत अधिक जुड़ी हुई है, कि वह अरामियों के खिलाफ अपने कुछ युद्धों में अहाब का सहयोगी था और यह कि उन सभी युद्धों के माध्यम से अहाब अपने अंतिम निर्णय पर पहुंचा।

लेकिन इतिहास में यह मुद्दा नहीं है। इतिहास में, बल्कि, हम पवित्र युद्ध की अवधारणा पर आते हैं। इतिहास में पवित्र युद्ध वह है जिसमें परमेश्वर हमारे लिए लड़ता है।

अब, हमें इस बात पर बहुत ध्यान देने की ज़रूरत है क्योंकि हमारे संदर्भ में और खास तौर पर इस्लामी संदर्भ में इन दिनों पवित्र युद्ध वह है जब मैं ईश्वर के लिए लड़ता हूँ और इसलिए मैं ईश्वर के लिए अपने युद्ध में अपने जीवन का बलिदान देता हूँ। लेकिन यह ईसाई अवधारणा से बहुत दूर है। आप ईश्वर के लिए ऐसा कुछ नहीं कर सकते जिससे ईश्वर की मदद हो।

बल्कि, यह परमेश्वर ही है जो आपके लिए कुछ कर सकता है। और इसलिए, यह बात यहोशापात की जीवन कहानी में सबसे प्रमुखता से प्रदर्शित होती है। इतिहासकार की प्रस्तुति में यहोशापात का शासन सबसे सकारात्मक तरीके से शुरू होता है।

वह हमें यहोशापात द्वारा टोरा के निर्देशों में नेतृत्व करने के तरीके के बारे में बताता है। तो इसका मतलब यह हुआ कि मूसा की शिक्षा का कुछ हिस्सा उपलब्ध है। यह लिखित रूप में है और वे जानते हैं कि ईश्वर की आराधना के संदर्भ में उन्हें क्या करना है और वे जानते हैं कि समुदाय के संबंधों के संदर्भ में उन्हें क्या करना है।

इसके अलावा, हम यहोशापात की अच्छाई को शहरों को मजबूत करने और सुरक्षा के लिए तैयार करने की उसकी क्षमता में देखते हैं। यहाँ फिर से हम उस तनाव को देखते हैं। अपने युद्धों को जीतने के लिए ईश्वर पर भरोसा करने का मतलब यह नहीं है कि आप मानवीय व्यावहारिक चीजें नहीं करते हैं जैसे कि खुद को बचाने के लिए सावधान रहना और अपने शहरों को मजबूत करना और इस बात से अवगत होना कि दुश्मन है और दुश्मन को पता होना चाहिए कि आप तैयार हैं ताकि वे आसानी से कब्जा न कर सकें।

और फिर, बेशक, इतिहासकार यहोशापात के कर संग्रह और जिस तरह से उसने अपने राज्य की इन सभी परियोजनाओं का समर्थन किया, उसका उल्लेख करता है। अब, यहाँ हम इतिहास में उस बात पर आते हैं जो राजाओं में बहुत प्रमुख है, अर्थात् अहाब के साथ उसका गठबंधन। अब हम अहाब को याद करते हैं, विशेष रूप से ईज़ेबेल और एलिय्याह के साथ उनके संघर्ष के संबंध में।

इज़ेबेल ने तय किया था कि इस्राएल के सभी लोग बाल की पूजा करेंगे, और परमेश्वर के नबियों और यहोवा के नबियों को मार दिया गया, सिवाय उन कुछ लोगों के जो एलिय्याह और कुछ अन्य लोगों के नाम पर छिपने और भागने में कामयाब रहे। अब रामोत-गिलाद गिलाद में जॉर्डन के पूर्वी किनारे पर एक इस्राएली किला था, जैसा कि नाम से पता चलता है, और जब्बोक नदी के किनारे, जिसे हमने पहले मानचित्र पर देखा है। और, ज़ाहिर है, जॉर्डन नदी का पूर्वी किनारा हमेशा अरामियों से खतरे में था।

दमिश्क में अरामियों का प्रभुत्व था, और वे हमेशा दमिश्क से गलील सागर के पूर्वी किनारे और यरमूक नदी की ओर और फिर उससे आगे जब्बोक नदी की ओर अपना क्षेत्र बढ़ाते रहे। और इसलिए, इस मामले में, अरामियों ने रामोत-गिलाद पर कब्ज़ा कर लिया था, जो कि गिलाद की पहाड़ियों में स्पष्ट रूप से एक ऐसा शहर था जो इज़राइल का था। अब हम एलिय्याह और अहाब के भविष्यवक्ताओं के बीच संघर्ष को याद करते हैं।

अहाब के सभी भविष्यवक्ताओं ने कहा कि तुम्हें गिलाद के रामोत में जाना चाहिए, और यह तुम्हें जीत के रूप में दिया जाएगा, जो कि, निश्चित रूप से, वैसा नहीं हुआ जैसा कि हुआ। अहाब बहुत भयभीत था, और वह जानता था कि इसका परिणाम ऐसा हो सकता है। इसलिए, आपको वह कहानी याद होगी कि कैसे अहाब ने अपना भेष बदला था। आम तौर पर, राजा मुख्य योद्धा होता है।

वह वही है जो प्रत्यक्ष रूप से मौजूद है। वह अन्य सैनिकों के लिए प्रेरणा है ताकि वे अपना युद्ध जारी रखें और लड़ते रहें। लेकिन अहाब को डर था कि अगर वह इतना प्रमुख है तो वह निशाना बन सकता है।

इसलिए, उसने कहा कि वह भेष बदल ले और राजा के रूप में न पहचाना जाए, और यहोशापात को ही उजागर किया जाना था। लेकिन यह अहाब के लिए अच्छा नहीं रहा क्योंकि सच्चे भविष्यवक्ता के शब्द बिल्कुल सच थे। अहाब युद्ध में एक सामान्य सैनिक के रूप में अनजाने में भी तीर लगने से मर जाएगा।

तो, हमारे पास अहाब की मृत्यु की कहानी है, लेकिन हमारे पास यहाँ हनन्याह की चेतावनी भी है क्योंकि, बेशक, यहोशापात वास्तव में यहाँ एक ऐसे तरीके से काम कर रहा था जो बिल्कुल अनुचित था। वह अहाब के सहयोगी के रूप में सेवा कर रहा था और मानव सेनाओं की शक्ति से, अरामियों को हराने के लिए एक सहयोगी के रूप में सेवा कर रहा था। लेकिन यहोशापात अपने शासन और यहूदा में अपने शासन के संदर्भ में सकारात्मक है, और हमें बताया गया है कि वह अपने राज्य में न्यायिक सुधार कैसे करता है।

हमने इस बारे में बात की है कि लेवियों का एक कार्य न्यायाधीश होना है, और इसलिए किलेबंद शहर निस्संदेह उनमें से कई लेवीय शहर थे, और यहोशापात न्यायाधीशों को नियुक्त करता है ताकि यहोवा के टोरा का प्रयोग किया जा सके और उसका पालन किया जा सके। और यहोशापात अपना उपदेश देता है कि कैसे नागरिकों के रूप में, उन्हें अपने राजा के प्रति वफादार होने की आवश्यकता है, उन्हें समाज के प्रति वफादार होने की आवश्यकता है, और उन्हें ईश्वर के प्रति वफादार होने की आवश्यकता है। तो, फिर यहोशापात के शासनकाल के अंत में क्या होता है कि उसे एक और चुनौती का सामना करना पड़ता है।

यह दक्षिण के लिए एक चुनौती है। उत्तर के लिए चुनौती वास्तव में अहाब का मुद्दा था, और राजाओं में, हम देखते हैं कि यह वह तरीका था जिसमें अहाब को उसके अपने राज्य में फिर से उसके सभी पापों के लिए न्याय किया गया था, विशेष रूप से नाबोथ के अंगूर के बाग के बारे में और एक आदमी की अपनी विरासत वाली संपत्ति को चुराने के बारे में जो हमेशा उसके परिवार के पास होनी थी। इसलिए, यहोशापात शिथिल रूप से एक सहायक और एक सहयोगी के रूप में शामिल है।

इतिहासकार के अनुसार, यह सकारात्मक नहीं है, अच्छा नहीं है, लेकिन उसका शासन बहुत सकारात्मक तरीके से समाप्त होता है। अब मोआब और अम्मोन पूर्व की ओर थे और उन्होंने यहोशापात के खिलाफ गठबंधन बनाया है। बहुत शक्तिशाली राज्य, जो बहुत ही दुखद हैं।

तो, हमारे पास यहोशापात का विलाप है, और यह इतिहासकार के बारे में बहुत कुछ बताता है। आपको प्रभु की तलाश करनी चाहिए, और यहोशापात ने ठीक यही किया। वह कहता है कि ये सेनाएँ हैं, और प्रभु, हम आपको खोजते हैं।

अपने राष्ट्र और अपने राज्य के विरुद्ध इस खतरे के संबंध में आप क्या करना चाहते हैं? और यहाँ हमारे पास एक भविष्यवक्ता, यहजकेल है, जो कहता है कि युद्ध ईश्वर का है। इसे हम पवित्र युद्ध कहते हैं। ईश्वर ही वह है जो आपके लिए लड़ने जा रहा है।

तो यहाँ हम देखते हैं कि यहोशापात किस तरह से युद्ध की तैयारी करता है। वह सैनिकों को नहीं बल्कि लेवियों को इकट्ठा करके ऐसा करता है। और वहाँ लेवियों और पुजारियों ने मिलकर इस महान पेशेवर और लेवी गायक मंडली का गठन किया।

अब, अपने आप में, यह कोई असामान्य बात नहीं है। संगीत वास्तव में अक्सर युद्ध में सैनिकों को निर्देशित करने और युद्ध के मार्ग का संचालन करने के मामले में भूमिका निभाता है। लेकिन जिस तरह से यहोशापात ऐसा करता है वह पूरी तरह से परमेश्वर को सेना के प्रमुख के रूप में प्रस्तुत करना है।

तो यहाँ आपके पास लेवियों और इस गायक मंडली को मोआब और अम्मोन के खिलाफ लड़ने के लिए एदोम की ओर जाते हुए देखा जा सकता है। यह एक बहुत ही असामान्य तरह की बात लगती है। लेकिन निश्चित रूप से, जैसा कि इतिहासकार कहानी प्रस्तुत करते हैं, यहाँ जो होता है वह यह है कि सेनाएँ अपने स्वयं के संघर्ष के संदर्भ में खुद को पराजित करती हैं, और यहोशापात

वह व्यक्ति है जो इस तथ्य को प्रदर्शित करता है कि ईश्वर पर भरोसा करना और प्रभु की खोज करना ही वह तरीका है जिससे हमें जीत मिलेगी।

तो, यह शायद परमेश्वर द्वारा हमारे लिए लड़ने के सबसे अनुकरणीय मामलों में से एक है। हम यरीहो और यरीहो के चारों ओर के इस्राएलियों और यरीहो के चारों ओर मार्च करते हुए सन्दूक के साथ आगे बढ़ने वाले याजकों की ओर वापस जा सकते हैं। यह निश्चित रूप से परमेश्वर द्वारा हमारे लिए लड़ने का एक प्रमुख उदाहरण है।

और फिर, जब अंतिम दिन आता है, और वे चिल्लाते हैं, दीवारें गिर जाती हैं, और शहर इस्राएलियों के लिए असुरक्षित हो जाता है। यह निस्संदेह परमेश्वर द्वारा हमारे लिए लड़ने का एक प्राथमिक उदाहरण है। लेकिन यहोशापात को यह दिखाने में लगभग दूसरे स्थान पर होना चाहिए कि परमेश्वर हमारे लिए कैसे लड़ता है।

यह डॉ. ऑगस्ट कोंकेल द्वारा इतिहास की पुस्तकों पर दिया गया उपदेश है। यह सत्र 18 है, ईश्वर हमारे लिए लड़ता है, पवित्र युद्ध।